प्राचीन भारतीय अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्व

अशोक कुमार
Lect. in History M.A. , NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सारः–

किसी भी समय व स्थान के इतिहास के अध्ययन में अभिलेखों की सर्वोत्तम विश्वसनीय स्त्रोत माना जाता हैं। सामान्यतः पाषाण खण्ड ,पाषाण स्तम्भ ,ताम्र पत्र ,धर्म स्मारक , राजमहल , मुद्रा , देवालय स्मारक आदि में अंकित अभिलेख किसी भी क्षेत्र के राजनैतिक , धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक पक्ष का मूक गवाह होता हैं[1]। अभिलेखों से न केवल राजकीय औ प्रशासनिक कार्यों की जानकारी मिलती हैं। बल्कि राजाओं की , वशावलियां , दानशीलता व विजयोत्सव का भी सटीक ज्ञान प्राप्त होता हैं। ये अभिलेख प्राचीन भारत में राजाओं व सामंतों द्वारा भिन्न–भिन्न अवसरों पर जारी किए जाते थे। यहाँ के प्राचीन भारतीय अभिलेख प्रायः ब्राह्मी , खरोष्ठी[2] और नागरी लिपि में अंकित हैं। इन अभिलेखों पर प्रायः तिथि का उल्लेख किया जाना इतिहास के कालक्रम निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में अगर अभिलेखों का मार्गदर्शन नहीं होता तो निश्चित रूप से इतिहासकार वास्तविक इतिहास के कुछ विशेष पहलूओं से वंचित रह जाते अभिलेख वास्तव में प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोतों में हमेशा अग्रणी और विश्वासनीय रहे हैं।

मूल शब्दः–

अभिलेख , पाषाण खण्ड , धर्म स्मारक , वंशावलियां , सांमत , विजयोत्सव , ताम्र पत्र ,पाषाण स्तम्भ , देवालय स्मारक ।

पूरे भारतीय प्रायद्वीप में अभिलेख लिखने की स्पष्ट व वास्तविक शुरूआत सम्राट अशोक से जानी जाती हैं। मौर्य सम्राट अशोक महान से पूर्व भी अनेक अभिलेख मिले हैं परन्तु उनका स्वरूप धार्मिक ज्यादा रहा हैं तथा वे क्रमबद्ध रूप से भी नहीं पाए जाते । सम्राट अशोक द्वारा सम्पूर्ण भारत तथा दूसरे सीमान्त स्थलों में शिला स्तम्भों व शिला खण्डों पर राजाज्ञा का अंकन कराया गया जिसे अशोक का शासनादेश , लाट , बीजक तथा राजाज्ञा भी कहते हैं[3]।

शोध–प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध–पत्र ,ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध–सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। वस्तुतः यह शोध पर द्वितीय आकड़ों पर आधारित हैं।

शोध के उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैंः–

अभिलेखों के ऐतिहासिक महत्व को दर्शना।
अभिलेखों का प्राचीन भारतीय इतिहास में योगदान को बताना।
अभिलेखों तथा राजाओं के संबंधों को प्रदर्शित करना।

मौर्य काल की जानकारी के महत्वपूर्ण स्त्रोत अशोक के धर्मालेख हैं जिन्हें मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया जाता हैं– शिलालेख , स्तम्भलेख तथा गुहा लेख । इनसे समाज में व्याप्त कुरीतियां ,सामाजिक मान्यताएं , धर्मान्धता तथा लिपि को ज्ञान होता हैं। चीनी यात्री फाहचान ने अपने यात्रा क्रम में अशोक के छः स्तम्भों को और उसके 220 वर्ष बाद आए हयूनसांग ने 12 स्तम्भों को देखा। ये स्तम्भ सारनाथ , प्रयाग , वैशाली , राम पुरवालोरियानन्दनगढ़ , टोपरा ,लुम्बिनी , कोसम , सांगी आदि स्थानों पर विराजमान थे।

राजा अशोक के प्रधान शिलालेखों की कुल संख्या 14 हैं[4] जो 8 अलग–अलग स्थानों से प्राप्त किए गए हैं। इनमें शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा (पाकिस्तान) , कालमी (देहरादून) , मिरनार (जूनागढ़), धौली (भुवनेश्वर) , जौगढ़ (गंजास),एर्रगुदि(कर्नूल) और सोपरा (थाणे) आदि भारत में अवस्थित हैं इन शिलालेखों में पहले में पशुबली की मर्त्सना , दूसरे में धर्म विचार , चौथे में युद्ध घोष की जगह धम्म विजय , पांचवें में धर्म महामात्रों की नियुक्ति , सातवें व आठवें में तीर्थ यात्राओं का विवरण , ग्यारहवें में धर्म की व्याख्या ,तेरहवें में कलिंग युद्ध और चौदहवें में जनता को धार्मिक जीवन बिताने की बातों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया हैं।

अशोक कालीन लघु शिलालेख 12 से भी अधिक स्थानों से मिले हैं जिनमें गुर्जरा , सासाराम , भब्रू , मास्की , ब्रह्मग्रिरी , रामेश्वर आदि प्रमुख हैं। अशोक के स्तम्भलेखों की कुल संख्या सात हैं जो छः विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं इनमें दिल्ली , टोपरा , दिल्ली–मेरठ , लौरिया अरेराज , लौरिया–नंदनगढ़ , रामपुरवा व प्रयाग स्तम्भ लेख का नाम आता हैं । अशोक कालीन लेखों में गुहा लेख का अपना विशेष महत्व हैं जो मुख्य रूप से बिहार राज्य के बाराबर गुफाओं में मिलते हैं[5]।

मौर्य युग के अभिलेखों के बाद शुंग काल के दो अभिलेखों का विशेष महत्व हैं इनमें से एक हेलियोडोरा द्वारा स्थापित , वासुदेव कृष्ण को समर्पित बेसनगर गरूड़ स्तम्भ लेख हैं[6] तथा दूसरा धनदेव का अयोध्या शिलालेख । इन अभिलेखों से शुंग काल की धार्मिक स्थिति , वंश परिचय तथा पुष्यमित्र के जीवन चरित्र की स्पष्ट जानकारी मिलती हैं।

कलिंग राजा खाखेल का'हाथी गुफा अभिलेख[7]'उड़ीसा से पाया गया हैं। इस अभिलेख से खारवेल राजा के विजयोत्सव , वंश परम्परा तथा साम्राज्य विस्तार का काम होता हैं। 11 ई0 का राजा वशिष्ठिपुत्र पुलमावी का 'नासिक गुहा अभिलेख' में राज्य विस्तार व प्रशासिनक कुशलता की जानकारी मिलती हैं। रानी नागविक को 'नानाघाट गुहा अभिलेख' में यज्ञ व गऊदान की विशेष चर्चा हैं। 20 पंक्तियों के ''रूद्रदामन गिरनार शिलालेख '' में सुदर्शन झील का पुननिर्माण व राजा के शौर्य की चर्चा की गई हैं। इस अभिलेख की भाषा शुद्ध संस्कृत तथा तिथि ब्रह्मी हैं। 'नासिक गुहा अभिलेख' राजा नहपान के विषय में तथा इसके द्वारा पूरे भिक्षू संघ को दिए गए दान की चर्चा की गई हैं प्राचीन भारतीय आर्थिक इतिहास की दृष्टि से इस अभिलेख का विशेष महत्व हैं।

भारतीय इतिहास में गुप्तकालीन अभिलेख अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। जिनमें प्रमुख राजा समुन्द्रगुप्त का ''प्रयाग प्रशस्ति[8]'' सबसे महत्वपूर्ण हैं इसके लेखक कवि हरिषेण हैं। इसमें राजा का साम्राज्य विस्तार , कलात्मक गुण , लालित्य उपलब्धिय , विजयोत्सव की जानकारी मिलती हैं । 33 पंक्तियों के इस लेख की प्रथम सोलह पंक्तियां पद्य में तथा शेष गद्य में हैं। राजा चन्द्रगुप्त विक्रमाद्वित्य के समय का 'महरौली स्तम्भ लेख' , 'सांची अभिलेख तथा मथुरा स्तम्भ लेख का विशेष महत्व हैं जिसमें कपिलेश्वर , शिवलिंग – स्थापना की चर्चा हैं ' सांची अभिलेख महाबिहार में रहने वाले श्रमण के आधार – विचार व दान– धर्म से जुड़ा हैं।

प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिए चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का 'महेरौली लौह स्तम्भ[9]' एक नायाब नमुना हैं।छः पंक्तियों के इस लेख में राजा चन्द्र द्वारा विष्णुपद पर्वत पर विष्णुध्वज स्थापित करने का उल्लेख हैं राजा कुमारगुप्त का 'करमदण्डा अभिलेख' की शुरूआत 'नमो महादेवाय' से हुई हैं जो उस समय की धार्मिक प्रवृति पर प्रकाश डालता हैं। कुमारगुप्त प्रथम का मन्दसौर से प्राप्त अभिलेख कुल 24 पंक्तियों का हैं जिसमें राजा को विभिन्न विरूद से अलंकृत किया गया हैं। इसमें इसके शौर्य की विशेष चर्चा हैं। गुप्तकाल के अभिलेखों में सैदपुर के निकट 'मितरी से प्राप्त स्तम्भ लेख' का अपना महत्व हैं। यह अभिलेख 19 पंक्तियों का हैं। इसमें राजा अपने कुल, लक्ष्मी व वैभव की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण रात्री भूमि पर सोता हैं तथा हुण सत्ता के पराभव का वृतांत की जानकारी मिलती हैं। सांची महास्तूप के पूर्वी तोरण द्वार पर 'सांची अभिलेख' भी गुप्त काल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता हैं।

उत्तर गुप्तकालीन लेखों में 'अपसढ़ से प्राप्त आदित्य वर्मन का लेख विशेष उपयोगी हैं। इसमें मागध गुप्त वंश की वंश तालिका का उल्लेख हैं' इस युग के लेखों में मौखरी नरेश ईशान वर्मन का 'हरहा अभिलेख', राजा अनन्तवर्मा का 'अक्षयवाट अभिलेख', जीवित गुप्त द्वितीय का 'देव वरूणार्क अभिलेख ' ।आदि महत्वपूर्ण साम्राज्य प्रसार , वंशावलियां और दान इत्यादि की जानकारी देते हैं।

राजा हर्षवर्धन काल का 'बांसखेडा अभिलेख[10]' के अंत में राजा के हस्ताक्षर अंकित हैं। यह 12 पंक्तियों का अभिलेख हर्ष काल की वंश तालिका , दान–धर्म व आर्थिक संसाधन की विशेष जानकारी देता हैं। पुलकेशिन द्वितिय के राज कवि रवि कीर्ति के द्वारा रचित 'ऐहोल प्रशस्ति' से राजा के गृहयुद्ध , विजय , वंश परिचय व हर्षवर्धन से युद्ध तथा शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती हैं। प्रतिहार वंशीय राजा मिहिर भोज के 'ग्वालियर प्रशस्ति' की शुरूआत 'ओं नमों वैष्णवैं ' से की गई हैं। प्रतिहार वंश को जानने के लिए यह अभिलेख एक दर्पण हैं' इतिहासकारों के अनुसार 820ई0 में यह प्रशस्तिकार बालादित्य द्वारा लिखा गया था।

बिहार व बंगाल प्रांत में 300 वर्षों तक राज करने वाले पाल वंश के अभिलेखों में धर्मपाल का 'जालिमपुर अभिलेख' मल्दा जिला बांग्लादेश से प्राप्त हुआ हैं। इस अभिलेख की शुरूआत 'ओ स्वस्ति' से हुई हैं इसमें पालवंश की वंश–तालिका , प्रशासनिक जानकारी तथा साम्राज्य विस्तार की विशद जानकारी हैं। शासक धर्मपाल का एक अभिलेख बोध गया से भी प्राप्त हुआ हैं। 1929 ई0 में नालन्दा उत्खनन से प्राप्त देष पाल का 'नालंदा अभिलेख[11]से भारत व सुवर्णद्वीप के संबंधों की विशेष जानकारी प्राप्त होती हैं, इसमें राजा द्वारा किए गए दान कार्य की चर्चा हैं तथा इसी से ज्ञात होता हैं कि प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए शासन ने सम्पूर्ण राज्य को विषय व गांव में विभक्त कर दिया था । पाल कालिन अभिलेख में नारायणपाल का भागलपुर (बिहार) से प्राप्त 'ताम्रपत्र अभिलेख' का विशेष महत्व हैं जो राजा ने अपने शासन काल के 17वें वर्ष वैशाख मास के नवें दिन जारी किया । इसमें राजा द्वारा देवालय निर्माण व प्रशासन सम्बन्धी जानकारी के साथ विभिन्न अधिकारियों के नाम की चर्चा की गई हैं। पाल काल के अन्य अभिलेखों में राजा गोविन्द पाल की 'श्री विष्णुपद अभिलेख' भी पाल काल की महत्वपूर्ण जानकारी देता हैं। पाल काल के पश्चात् सेन वंश के लेखों में 'देवपारा अभिलेख ' प्रमुख हैं। इसकी शुरूआत 'ऊँ नमः शिवाय' से हुई हैं। इसमें 36 श्लोक तथा 32 पंक्तियां हैं' इसमें राजा की वंशावली , धर्म आस्था व सामाजिक और राजनैतिक जानकारी की बहुमूल्य चर्चा हैं।

उपयुक्त अभिलेखों के अलावा भी प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के लिए बहुत सारे अभिलेख हैं जिनका महत्व स्थानीय इतिहास निर्धारण में महत्वपूर्ण हैं। इतिहासकारों का मानना हैं कि अभी भी कुछ अभिलेख भारतीय पुरातत्वविद्वों की नजरों से अछूते हैं। जिनके अध्ययन अनुशीलन से प्राचीन भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरूआत होगी।

सचमुच प्राचीन भारतीय इतिहास निर्माण में अभिलेख एक प्रकाशस्तम्भ का कार्य करते हैं। भारतीय अभिलेखों ने प्राचीन भारतीय इतिहास को लिपीबद्ध करने में अमूल्य भूमिका अदा की हैं। यही कारण हैं कि युगो–युगो तक इनका महत्व व उपयोगिता भारतीय जनमानस के बीच बनी रहेगी।

संदर्भ सूचीः–

1. Indian History Ancient India ,Pratiyogita Darpan Editorial , Page-6
2. Glimpses of Indian Culture , Vikramasimha , Page-133
3. History , Religion and Culture of India- Volume-4 , S.Gajrani Page-7
4. Historical Dictionary of India , Surjit Man Singh , Page- 67
5. The Edicts of Ashoka , N.A. Nikam & Richard Mckeon Page- 7 to 12
6. Buddhist Circuit in Central India : Sanchi , Satdhara , Sonari , Andher , Travel …….. Page-72
7. History of Indian theatre , M.L.Varad Pande , Monohar Laxman Varadpande-1987 , Volume-1 , Page-226
8. The Gupta Empire , RadhaKumad Mookerji , Page-129
9. Science ,Technology , Imperialism , and war , Jyoti Bhusan Das Gupta , Page – 273
10. Ancient Indian Administration & Penology , Paripurnananda Varmma , Page-88
11. Orissa Education Magazine – Volume 14-Page -42
12. Pratiyogita Darpan , Indian History , Series-3 Page -64